Vol 3 Issue 2 March 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 2,March. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net
ORIGINAL ARTICLE

विकासशील राष्ट्र और मीडिया

धरवेश कठेरिया , संदीप कुमार वर्मा

सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

सारांशः

अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रयास और मीडिया के दृष्टिकोण परस्पर नीतियों व संबंध की विद्यमान स्थिति व उपयोगिता को समझने लगे हैं। देखा जाए तो इन संगठनों की वर्तमान विचारधारा और व्यवस्थाएं पश्चिम की स्थापित व्यवस्थाएं रही है। पश्चिमी संप्रभु राज्यों का इतिहास लगभग तीन शताब्दियों से अधिक पुराना नहीं है। इस दौरान संप्रभु राष्ट्रों में संचार और संप्रेशण द्वारा अंतराष्ट्रीयतावाद, संगठन और संबंधों को सुंगत और असंगत बनाने के प्रयास किए गए। इस संबंध में संचार माध्यमों ने वैश्विक स्तर पर नेतृत्व के लिए नए मार्ग खोले और नई संरचना की प्रस्तावना स्थापित की। यूरोप में स्थायी शांति की स्थापना के लिए एक योजना को जब प्रकाशित किया गया, तभी यूरोप के चौबीस ईसाई राज्यों के सम्राटों के एक संघ की रचना का प्रस्ताव रखा। इसके साथ एक प्रभावी प्रकाशन स्थायी शांति की ओर विभिन्न सुझाव के साथ विकसित भी हुआ। वहीं इनकी संप्रेषणीयता को व्यापक फलक देने के लिए समय–समय पर विभिनन आयोजन, कांग्रेस और सम्मेलन आदि संवाद विस्तार हेतु संभावनाएं बनी। इस क्रम में संचार व्यवस्था को उल्लेखनीय योगदान के रूप में ग्रहण किया गया क्योंकि किसी प्रयोजन से स्थापित वार्ता, संधि और राजनीतिक सामंजस्य में संचार व संप्रेशण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध से वर्तमान तक दुनिया भर के राष्ट्रों में सहयोग व सामंजस्य की कार्यवाहियां लगातार चल रहीं हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राश्ट्र संघ के विभिन्न संगठनों में लगभग 192 देशों की सदस्यता भी इस बात का प्रमाण है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकास के सापेक्ष प्रत्येक देश मार्गदर्शन सहित प्रस्तावों के अनुक्रम में अपना योगदान दे रहे हैं तथा परस्पर सहभागिता चाहते हैं। अनेक घोषणाओं व संधि के प्रसार संबंधी कार्यवाहियां मीडिया द्वारा प्रवर्तित हैं। जिनमें मीडिया के विभिन्न माध्यमों द्वारा ही विकास के सापेक्ष प्रतिबद्धता संभव हुई है। और, प्रस्ताव, सूचना, संदेशों आदि पर मीडिया के प्रस्तुतीकरण, प्रतीक चिन्हों की महत्ता, सांकेतिक सहमति आदि द्वारा रेखांकित हो पाते हैं। देखा जाए तो आर्थिक व सामाजिक स्तर पर अनेक सिफारिशों को मीडिया ही प्रोत्साहित करती है। अनेक माध्यम विकासशील देशों के लिए योजनाओं, संसाधनों, ऊर्जा, शोध, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषज्ञों के विचार–विमर्श आदि आपसी हितों के साथ विश्व व्यवस्था की तारतम्यता का निर्माण कर रहे हैं। ऐसे में विकासशील देशों में मीडिया के आवश्यक पहलुओं पर चर्चा महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना -

किसी भी क्षेत्र, संदर्भ आदि के बारे में उसका विकास रचनात्मक परिवर्तन का एक सेतु होता है। ऐसे विकास को क्रमिक और सृजनात्मक रूप से व्यक्तियों, समुदायों सहित राष्ट्रों के सापेक्ष सार्वभौमिक स्तर पर आकलित किया जाता है। ऐसे प्रयास के अलावा आधुनिक सभ्य राष्ट्रों में सामान्य सिद्धांतों को भी स्पष्ट रूप से लागू किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय संगठनों और संस्थाओं की भूमिका भी इन्हीं संदर्भ में आकार लेती हैं। विकसित राष्ट्र प्रायः विकासशील राष्ट्रों के लिए पथप्रदर्शक की भूमिका में पाए जाते है। ऐसे में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि मीडिया एक ऐसे संवाहक का कार्य करता है जिससे किसी राष्ट्र को दिशा दी जा सकती है। इनमें लोकहित में जनमत तैयार करने से लेकर नीतियों और योजनाओं की संरचना को तैयार करने के अनुक्रम को दिशा देने तथा वस्तुस्थिति के निहितार्थ चीजों को अर्थ देना मीडिया का महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होते दिखता है। विकासशील देशों में समग्र विकास व उन्नति के अनेक कारक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवर्तन विभिन्न योजनाओं और संप्रेषण माध्यम से भी होते हैं, जिनमें जनसंचार माध्यम भी सहायक रहते हैं।

विकास बहुआयामी अवधारणा है, जिसके राजनैतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक आदि संदर्भ हो सकते हैं और इसके लक्ष्य दीर्धकालीन होते हैं। साथ ही विकास की संकल्पनाएं सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के साथ संस्थाओं, प्रशासनिक और अन्य संरचनात्मक क्षमाताओं का निर्माण व परिवर्तन की मांग करती है। विकास नियोजित प्रयास और योजनाओं की मांग भी करता है। मीडिया विकास के प्रयोजन, प्रयास और योजनाओं को क्रियान्वित करने में अहम भूमिका निभाती है। आज विकासशील देशों की प्राथमिकताओं में मुद्दों से संबंधित योजनाओं और क्रियांवयन प्रमुख है। देखा जाए तो माध्यमों के प्रयोग की तकनीक और दृश्टिकोण में सहायक हैं। संचार सेवाएं आज किसी राष्ट्र को सबल करती हैं और प्रमुख स्तंभ की भूमिका में हैं। जिन स्तंभों के बिना राष्ट्र निर्माण की सामान्य परिकल्पना संभव नहीं है।

विकास का अर्थ अलग–अलग स्थिति में विभिन्न विस्तार, बढ़ावा और उद्घाटित करने आदि के रूप में लगाया जाता है। आज वैश्विक स्तर पर सूचना, हस्तक्षेप, विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, सीमाओं सहित मनुष्य के वर्गों को देखते हुए विभाजित किया जाता है। विकासशील राष्ट्रों द्वारा सामान्यतः लक्ष्य निर्धारित कर चिन्हित किया जाता है जो विकास के मूल तत्वों सहित अभी तक हासिल नही कर पाये हैं। यह पैमाना किसी देश के लिए उत्पादन जैसी स्थिति से नहीं लिया जा सकता है। विकास के लिए न्यायसंगत वितरण को ध्यान में रखा जाना चाहिए। ऐसे में जनसंचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण साबित होती है। सूचना समाज युग में विकासशील देशों के लिए अनेक नितियों सहित कठिनाइयों का प्रबंधन जनता के समक्ष बनाएं रखना मीडिया का कार्य है। डिजिटल युग में इंटरनेट द्वारा विभिन्न माध्यम भी सूचना के सुपर हाइवे में शामिल

Title : *'विकासशील राष्ट्र और मीडिया*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *धरवेश कठेरिया , संदीप कुमार वर्मा* **yr:2013 vol:3 iss:2**

होने लगे हैं। पिछले दशक में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक सहित सोशल माध्यमों की पहुंच अब विकासशील राष्ट्रों में तेजी से बढ़ी है। इस संबंध में यूनेस्को द्वारा परियोजनाएं संचालित व आंकलित भी की जा रहीं हैं। विकासशील देशों में मीडिया डेवलपमेंट इंडीकेटर जैसी रिपोर्ट को तैयार कर यूनेस्को उन राष्ट्रों के समग्र विकास के लिए बतौर माध्यम विकास को अभिव्यक्ति के माध्यम से जोड़ रही है। कई देशों के लिए इस प्रकार के प्रयास पहली बार किए गए हैं भूटान और मालदीव इसके एक उदाहरण हैं।

मीडिया के विकास और देश के विकास निश्चित ही अंतर्सम्बंधी साबित होते हैं इसलिए उन क्षेत्रों को चिन्हित करना आवश्यक है जहां मीडिया का विकास समुचित नहीं हुआ है। यहां मीडिया व्यवसाय के बुनियादी आधार और मीडिया उद्योग में विविधताएं हैं और विकास की संभावनाएं अभी चुनौतीपूर्ण हैं। ऐसे में लोकतांत्रिक स्थिति को मजबूत करना परम आवश्यक है तभी विकास संभव है। और, यह स्थिति लोकतंत्र को अभिव्यक्ति की स्थिति में ही संभव है। भूटान में ही देखा जाए तो यूनेस्को द्वारा वर्ष 2010 की रिपोर्ट के अनुसार केवल दो दैनिक समाचारपत्र, पांच साप्ताहिक समाचारपत्र, पांच रेडियो स्टेशन, एक टेलीविजन चैनल तथा कुछ सूचना संचार तकनीक के संसाधन हैं। इनमें इंटरनेट द्वारा संचालित उपकरण एवं फोन सुविधा के आधुनिक उपकरण व सेवाएं हैं। ऐसे में विकास के आयाम को पर्याप्त वातावरण देने के लिए मीडिया को प्राथमिकता देकर, उसके माध्यम से अन्य विकास को मूल धारा में लाने का प्रयास किया जा सकता है। क्योंकि, मीडिया अन्य अवरोधों को दूर करती है वहीं परिवेश व समाज में मूल्यों को स्थापित किया जाता है बशर्ते अभिव्यक्ति के माध्यमों को अधिकाधिक स्वतंत्रता दी जाए। वही स्थिति मालदीव में देखें तो अभी प्रति 1000 व्यक्तियों पर 59 इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं और संबंधित सरकार के पास सूचना संचार तकनीक के विकास की नीतियां पर्याप्त विस्तृत नहीं की जा सकी हैं।

आज दुनिया के सभी देशों के लिए अंतरराष्ट्रीय संगठनों से जुड़ना प्राथमिकता रहती है। क्योंकि इन संगठनों से जुड़ने से अनेक प्रकार की संधियों को आधार प्रदान किया जा सकता है। विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर परस्पर नीतियों को समायोजित किया जा सकता है और व्यवस्थित ढांचों को संगठित किया जा सकता है। ऐसे में विकासशील राष्ट्रों के सामने यह चुनौती होती है कि सामान्य हित में अनेक समर्थन, सुव्यवस्था, शांति और सुरक्षा को उक्त समूह में एकीकृत कर वार्ताओं आदि पर संयुक्त निर्णय को लागू कर सहमति के परिवेश का निर्माण करे। वहीं यह संप्रेषित करे कि अमुक राष्ट्र विश्व–बंधुत्व और विश्व नागरिकता का सूत्रपात करता है। बहुराष्ट्रीय मीडिया समूहों के बीच एकीकरण की अभिव्यक्ति तत्पर करना विकासशील देशों के लिए कठिन चुनौती है। क्योंकि यदि अमेरिका जैसा देश अफगानिस्तान या अन्य देशों पर यह कहकर कार्यवाही करता है कि अमुक गतिविधि में उसकी भूमिका संदिग्ध है और कार्यवाही आवश्यक है। ऐसे में मीडिया की भूमिका सूचना को नियंत्रित करने के क्रम में विद्यमान होगी साथ ही ऐसे मीडिया समूह की पक्षधरता उल्लेखनीय रहती है। भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका जैसे विकासशील देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास राजनीतिक समाधान पर निर्भर है। ऐसे में मीडिया की भूमिका एक दूसरे से विविध स्तर की रिक्त्ता, अस्थिरता व संतोष के स्तर पर आंतरिक और वाह्य स्तर पर निर्णायक होती है। विकासशील देशों के लिए संयुक्त राष्ट्र की वार्ता, सिफारिशें, प्रोत्साहन आदि में तेजी लाना परस्पर संबंध से अधिक मीडिया की प्रस्तुति पर भी लागू होता है। आज चीन विकासशील देशों के साथ मीडिया की आवाजाही व सहयोग व्यवस्था स्थापित करना और सहयोग के विषय निरंतर बढ़ाना चाहता है ताकि शांति व विकास के लिए लाभदायक अंतरराष्ट्रीय वातावरण तैयार किया जाए ।

विकासशील देशों के संदर्भ में बात रखते हुए विकास के अंतः स्वरूप और मूलभूत आवश्यक तत्वों को भी समझना आवश्यक है। क्योंकि, सभ्य राष्ट्रों में विकास के पहलू में समानता और स्वतंत्रता प्रमुखता से मौजूद रहती है, बाद में अन्य। स्वतंत्रता का अर्थ यहां राजनीतिक अथवा वैचारिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंतत्रता और सामाजिक दासता से संदर्भित स्वतंत्रता से है वहीं समानता का अर्थ यहां अवसर व विकास के वितरण की समानता है। एक महत्वपूर्ण बात विकास के संदर्भ में है कि विकास का अर्थ निर्भरता से भी लिया जाता है। दूसरी ओर जीवन संबंधी मूलभूत आवश्यकताएं नागरिकों व व्यक्तियों की मूलभूत सुविधाओं के लिए जिनमें रोटी, कपड़ा, मकान, प्राथमिक साक्षरता, शिक्षा, बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं और जीवन तथा सम्पत्ति की सुरक्षा आदि से लगाया जाता है। इस संबंध में न्याय एवं प्रसाशन व्यवस्था भी राज्य के उत्तरादायित्वों में प्रमुख है। क्योंकि इसके द्वारा ही आत्मसम्मान के साथ जीवन की संकल्पना को आधार दिया जा सकता है। किसी व्यक्ति और राष्ट्र के लिए विकास के मायने उसके आत्मसम्मान और गौरवपूर्ण जीवन के आवश्यक पहलू है। इनमें किसी प्रकार की कमी ही हमें विकास के अभाव को प्रदर्षित करती है। इस प्रकार विकास और विकासशील राष्ट्रों की अवधारणा एवं प्राथमिकता को स्पष्ट रूप में समझा जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वयुद्धों के बाद अलग–अलग देशों में विकास की स्थिति व मीडिया पर भी दृष्टि डालना आवश्यक है। विश्वयुद्ध के बाद की स्थिति में पूरे विश्व को एक नए दौर और संघर्ष के मैदान में छोड़ा, इस संघर्षपूर्ण स्थिति में अभी भी कई देश विकास के लिए जूझ रहे हैं। तमाम बुद्धिजीवी वर्ग ने विज्ञान, युद्ध कौशल तथा राजनीति के द्वारा अनेक राष्ट्रों ने प्रथक होकर अपना प्रभुत्व भी बनाया और अपना भविष्य निश्चित करने की होड़ में शामिल हो गये। बहुधा इस क्रम में मीडिया ने भी अपना रूख कुछ प्रभावित महसूस किया। परन्तु, समय ने करवट ली और राज्य धीरे–धीरे विकास की धारा में अपने को स्थापित करने लगे। इसके लिए मीडिया का भी योगदान लिया गया। बेशक मीडिया ने अपनी स्थिति को स्पष्ट किया और विकास के नाम पर दुनिया के संघर्षशील मामलों में लोगों को स्थान दिया और वास्तविक विकास के लिए अपने कदम आगे बढ़ाए। कई बार इन कार्यों में सफलता मिली और कहीं–कहीं असफलता भी। मीडिया के लिए भी यह एक चुनौती ही रही। यह चुनौती की स्थिति विश्वयुद्ध से आज बहुत हद तक स्पश्ट हो चुकी है, परन्तु विकासशील देशों में मीडिया की भूमिका और संघर्ष अभी भी जारी है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ माने जाने की स्थिति के बावजूद मीडिया के गिरते स्तर में भारत विश्व में उपरी दर्जे में पाया जाता है।

तमाम वे देश जो विकासशील है, अलग–अलग तरीके से अपने विकास यात्रा में रहे, इस यात्रा में मीडिया को विभिन्न आयाम मिले हैं। मीडिया आज भी विविध आयामों पर निरन्तर कार्य कर रही है। वहीं कई क्षेत्रों में मीडिया को सराहा गया है और बहुत जगह पर अभी मीडिया भी अपने को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही है। बेशक मीडिया ने विकास में एक बड़ी हिस्सेदारी निभायी है। विकासशील देशों की आंतरिक चुनौतियों के साथ जनसंख्या और राष्ट्रीय आय के मुद्दों को मीडिया समकालीन दृष्टि से प्रायः विश्लेशित करती है आज भारत जैसे देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता क्षेत्र में लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। राजनीति के केंद्र में भी मीडिया ने लोगों का ध्यान अंतरराष्ट्रीय अनुक्रम में बढ़ रहा है। देश की समृद्धि के लिए उल्लेखित किए जाने वाले पक्षों को कृषि, भूमि–व्यवस्था, और राजकीय कर, औद्योगिक नीति, निजीकरण जैसे मामलों को लोगों के सापेक्ष रखकर बहस को नई दिशा दी जा रही है। विकासशील देशों के संदर्भ में यह बेहद सराहनीय कदम हैं और मीडिया के लिए लोकतंत्र की परिपक्वता का सूचक भी है। क्योंकि, अब प्रायः हस्तक्षेपकारी प्रवक्ताओं के बीच तर्क–वितर्क के विषय को बेहतर महत्व दे रहे हैं जैसा कि पूर्व में या यूं कहें कि सरकारी मीडिया के द्वारा संभव नहीं था।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकासशील देशों के लिए शक्ति के मनोविज्ञान को समझना एक चुनौती है। विभिन्न संगठनों के साथ विकास–पथ पर मीडिया के मनोविज्ञान को समझ कर व्यापकता दी सकती है। भूमण्डलीकरण के साथ आज समूचे विश्व को विकास की एक ड़ोर में बांधने तथा सतत सर्वागीण विकास संबंधी प्रयासों को अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा कियान्वित किया जा रहा है। मीडिया ने भी इन प्रयासों को सफल बनाने में विशेष भूमिका निभाई है। इसी कारण से अंतरराष्ट्रीय आवागमन और समागम की स्पष्ट तस्वीर सामने आ रहीं हैं। मीडिया ने विकास–पथ पर सूचना क्रांति जैसे नए प्रतिमानों को प्रतिपादित किया है। विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास, अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय और अनेक गुट देशों के लिए मीडिया ने संचार माध्यमों द्वारा भरसक सहयोग और विकास को उत्प्रेरित किया है। आतंकवाद के मसलों पर देखें तो ओसामा बिन लादेन, डेविड हेडली, मलाला,

कसाब जैसे मामलों पर भी मीडिया ने मानक की स्थिति प्रस्तुत की।

मीडिया जहां एक ओर सृजनात्मक कार्यों से अपनी मजबूत स्थिति को बना पाने में सक्षम साबित हुयी है वहीं व्यवसायिक दौड़ में मीडिया जगत पर एकक्षत्र राज करने की भी स्थितियां समाने आ रहीं हैं। इस मकड़जाल में अब मीडियाकर्मी फंसते चले जा रहे हैं। ऐसे में राष्ट्रों के हित भी व्यवसायिक हित के सामने प्रमुखता से नहीं आ पाते हैं। नई आर्थिक नीति, विकास एवं मीडिया को समझना यहां अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इनके अंश सहसंबंधी हैं। देखा जाए तो विकास की वर्तमान स्थिति में मीडिया की भूमिका एक मकड़जाल की तरह भी बनती जा रही है। जिसकी आकृति या विकृति पर प्रश्न खड़ा होना स्वाभाविक है। कॉरपोरेट घरानों के हाथों में दिखती मीडिया ने आज अपने व्यवसायिक रूप को बदलकर रख दिया है। आज 'दुनिया–एक गांव' की संकल्पना को साकार किया जा चुका है। मीडिया इस काम में सबसे अहम भूमिका में सामने दिखायी दे रही है। उदारीकरण, निजीकरण, और वैश्वीकरण के दौरान भारत सहित अन्य विकासशील देशों में मीडिया ने अपना वृहद आकार एवं आयाम बढ़ाया है। इन सभी कारणों से मीडिया का राजनैतिक झुकाव, पक्षपात और स्वार्थ के भाव का छुपा होना एक स्वाभाविक कारण हो सकता है। समय–समय पर मीडिया ने अपना रवैया राश्ट्रवादी भी दिखाया है। इस मकड़जाल में हमें एक हिस्से के तौर पर उपस्थिति दर्ज करानी पड़ सकती है, परन्तु मीडिया को समाज के उत्तरोत्तर लाभ दिलाने के प्रति मीडिया को अपने उत्तरदायित्व समझने होंगे। विकास की मौजूदा धारा को समझना और निरन्तरता की परंपरा को बनाए रखना मीडिया द्वारा अपेक्षित होगा।

दूसरी तरफ विकास एवं सृजन संबंधी सकारात्मक पहलू को यदि हम देखें तो विकास के लिए विशिष्ट रूझान की भी जरूरत होती है, इसलिए जहां तक हो सके मीडिया को सकारात्मक समाज व उत्तरोतर विकास की ओर अग्रसर होना चाहिए। मीडिया में विकास संबंधी भूमिका चर्चा–परिचर्चा, समाचारों के प्रस्तुतीकरण व सूचनाओं द्वारा आमजन में सृजनशीलता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण लाना चाहिए। नागरिकों के जीवन स्तर के लिए उत्साही कार्यक्रमों, नवीन तकनीक की ग्राह्यता, ग्रामीण एवं शहरी बुनियादी ढांचे, जनसामान्य की सुविधाएं व गुणवत्ता, सिचाई, ऊर्जा, सांस्कृतिक संरक्षण, खनिज ऊर्जा व वैकल्पिक ऊर्जा, संचार, यातायात, भौगोलिक सीमाएं, भ्रष्टाचार के विरूद्ध नीति, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सेवा आदि को मीडिया द्वारा भविष्यगामी दृष्टि से विश्लेषित कर प्रस्तुत करना चाहिए। ऐसी दिशा में विकासशील देशों में जनमाध्यम अब तेजी से विचार कर रहे हैं। क्योंकि अब भूमंडलीकरण के नए दौर में प्राथमिकताएं भी बदलती जा रहीं हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय में विकासशील देशों की आवाज मुख्य धारा में अभी कमजोर है। विकासशील देशों में मीडिया क्षेत्र में विस्तार और आवाजाही के सहयोग से न सिर्फ पारस्परिक समझ व मैत्री संभव है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय पटल पर विकासशील देशों के समान हितों की सुरक्षा के लिए भी मीडिया के प्रयास लाभदायक सिद्ध हो सकेंगे।

विश्व भर में नई आर्थिक नीति के दौर में विकासशील राष्ट्रों में मीडिया की स्थिति कई मायनों में संदेहास्पद है जो मीडिया के विभिन्न सकारात्मक पहलुओं के सामने अटकलें खड़ी कर देती है। लेकिन मीडिया अपनी कार्यशैली में विकासशील देशों के लिए प्रयासरत भी दिखती है। जिनमें पर्यावरण की घोषणाओं सहित मानव विकास के आयाम एवं आवश्यक नीतिगत निर्णय आदि में भूमिका व्यापक रही है। दूसरे शब्दों में कहें कि यह मीडिया के एक्शन प्रोगाम रहे हैं। इन राष्ट्रों के लिए महिलाओं की उन्नति व सामाजिक स्तर जैसे अधिकारों को सुनिश्चित कर समानता, विकास और शांति आदि के उत्थान हेतु महिलाओं पर 'महिला विश्व सम्मेलन' हुए हैं। मैक्सिको में 1975 में हुए प्रथम महिला सम्मेलन के बाद सितम्बर 1999 तक चौथे महिला सम्मेलन को चीन में आयोजित किया गया। विश्व शिक्षा फोरम, आंतकवाद के विरूद्ध वित्तीय पोशण प्रबंध करने के लिए लिए प्रयास अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेज किए जा रहे हैं और रासायनिक हथियरों के प्रतिबंध पर मीडिया के अपने स्वतंत्र मत भी रखे हैं। ग्लोबल वार्मिंग जैसे गंभीर मुद्दे पर मीडिया ने विकासशील देशों को आगाह कर उनकी नीतियों व मसौदे को विकसित देशों की ओर से पर्यावरण प्रदूषक उत्सर्जन में कटौती की बाध्यकारी वचनबद्धता के लिए प्रेरित किया है। साथ ही जलवायु परिवर्तन के खतरों का मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया है। इस संबंध में 16 जनवरी 2005 को 'क्योटो प्रोटोकाल' अस्तित्व में लाया गया। वहीं प्रकृति व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए विश्वव्यापी कोश बनाया गया। पिछले दो दशकों में समूचे विश्व में वैश्वीकरण की विभिन्न नीतियों ने आर्थिक असंतुलन, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों का दुरूपयोग किया। विश्व में इस चिंता को देखते हुए मीडिया लगातार प्रतिनिधियों, बुद्धिजीवियों, संस्थाओं व कार्यकर्ताओं से विस्तृत चर्चाएं व मंथन करता रहा है। ऐसे प्रयास विकासशील देशों के लिए वैश्वीकरण के विकल्पों को तलाशने व सामाजिक स्तर पर नया मंच खड़ा करने में सहायक होंगे।

संदर्भ सूची–

1.भट्टाचार्य सत्यसाची, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.

2.शर्मा प्रभुदत्त, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति : सिद्धांत एवं व्यवहार, प्रकाशक– कालेज बुक डिपो, जयपुर, 1998.

3.अग्रवाल एच.ओ., अंतर्राष्ट्रीय विधि एवं मानव अधिकार, प्रकाशक– सेंट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2000.

4.जोशी राम शरण, मीडिया विमर्श, प्रकाशक– सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली।

5.जोशी पूरन चंद्र, सुनील कुमार सिंह (अनुवादक), संस्कृति विकास और संचार क्रांति–बदलते परिप्रेक्ष्य, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2001.

6.हरमन एडवर्ड एस., मैक्चेस्नी रॉवर्ट डब्ल्यू., भूशण चंद्र (अनुवादक), भूमंडलीय जनमाध्यम (निगम पूंजीवाद के नए प्रचारक), प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., दिल्ली, 2006.

7.चॉमस्की नोम, जनमाध्यमों का माया लोक, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

8.पारख जवरीमल, जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, प्रकाशक– प्रकाशक– अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2001.

9.धूलिया सुभाश, सूचना क्रांति की राजनीति और विचारधारा, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, संस्करण– 2001.

10.Joshi P.C., Communication and National Development, Publisher- Anamika Publishers, New Delhi, 2002.

11.Neelsen Jhon P. & Malik Deepak, Crisis of State and Nation, Publisher- Manohar Publishers, New Delhi, 2007

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net